Issue-07/Vol-22/March 2019 ISSN No. 2319 - 5908
An International Multidisciplinary Refereed Research Quarterly Journal

शोध संदर्श

SHODH SANDARSH

शिक्षा, साहित्य, इतिहास, कला, संस्कृति, विज्ञान, वाणिज्य आदि

(विशेषांक)

Chief Editor :
Dr. V.K. Pandey

Editor :
Dr. V.K. Mishra
Dr. V.P. Tiwari

विविध ज्ञान - विज्ञान - विषय का मन्थन एवं विमर्श।
नव - उन्मेषी दशा - दिशा से भरा 'शोध - सन्दर्श'

Scanned with CamScanner

18

- भारतीय संस्कृति बनाम पाश्चात्य जीवन शैली (डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल के नाटकों के विशेष संदर्भ में) —*नाना साहब जावले* 653-657
- आधुनिक परिप्रेक्ष्य में चोलकालीन ग्राम सभाओं की प्रासंगिकता—*आशुतोष शुक्ल* 658-661
- हिन्दी दलित पत्रकारिता में साहित्य, शिक्षा और दलित स्त्रियों की समस्याएँ—*लाल चन्द पाल* 662-666
- प्रेमचंद की कहानियों में दलित दृष्टि—*मुकेश कुमार* 667-670
- दूधनाथ सिंह के कथा साहित्य पर पूर्वांचल की भाषा अवधी व भोजपुरी का प्रभाव—*नूतन सिंह* 671-673
- मन्नू भण्डारी के उपन्यासों में स्त्री पात्रों की सामाजिक भूमिका—*डॉ. आराधना मिश्रा* 674-678
- सूरदास का विरह-वर्णन—*डॉ. मनोहर आप्पासो जमदाडे* 679-681
- बौद्ध देशना में पर्यावरणीय विमर्श—*डॉ. विमलेश कुमार पाण्डेय* 682-684
- Wordsworth the Poet of Solitude in the Prelude—*Dr. Atul Kumar Tiwari* 685-689
- Impact and Importance of Cashless Transaction in India —*Dr. Jyotsana Kumari* 690-695
- प्राचीन भारतीय साहित्य में वर्णित जल का महत्त्व-भूगर्भ जल के विशेष संदर्भ में—*गामा यादव* 696-700
- प्राचीन भारत में कृषि-तकनीक : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन—*सोनी कुमारी* 701-705
- जनधर्मी रंगशिल्पी : नरेन्द्र मोहन—*डॉ. नवनाथ शिंदे* 706-708
- भाषा की विशेषताएँ एवं भाषा के विविध रूप—*डॉ. एम. वासंती* 709-711
- फिल्मांतरित सिनेमा के द्वारा भाषा शिक्षण (साहित्य पर बनी हिंदी फिल्मों के विशेष संदर्भ में) —*डॉ. गोकुल गोरख क्षीरसागर* 712-714
- स्मृतिसम्मतोपनयनसंस्कारस्य साम्प्रतिकजीवने उपादेयता—*निकूरामः* 715-716
- हिंदुस्तानी साहित्य और संस्कृति में अमीर खुसरो का योगदान—*सुमय्या असमा* 717-720
- आधुनिक प्रमुख संस्कृत महिला नाटककारों का अवदान—*नीलिमा पाण्डेय* 721-723
- निर्धनता एवं ग्रामीण जीवन—*चन्द्र प्रकाश* 724-727
- विवेकानन्द की दृष्टि में जगत का स्वरूप : एक दार्शनिक विश्लेषण—*डॉ. तृप्ति सिंह* 728-730
- ग्रामीण महिला उत्थान में स्वयं सहायता समूह की भूमिका—*राणा प्रताप सिंह* 731-734
- इक्कीसवीं सदी कहानियों में संवेदना के विविध धरातल (2000-2010) —*राठोड़ ज्योति चंद्रकांत* 735-737
- स्त्री विमर्श का नया यथार्थ रचती शिवमूर्ति की कहानियाँ—*देवेन्द्र कुमार कनौजिया* 738-741
- अमरकान्त के उपन्यासों में प्रमुख मध्यवर्गीय स्त्री पात्र—*शिव नरायन राजभर* 742-745
- महात्मा गाँधी का साधन-साध्य सिद्धान्त : एक समालोचनात्मक अध्ययन —*डॉ. राजेश बहादुर सिंह* 746-748
- Marriage, Political Corruption and Complied in the Early Plays of Elmer Rice—*Shipra Mishra* 749-750
- बाल श्रमिक एक सामाजिक अभिशाप—*रवीन्द्र नाथ शर्मा* 751-753
- भारतीय समाज के शहरी क्षेत्रों में औरतों के लिए कल्याणकारी कार्यक्रम—*डॉ. रणभद्र सिंह* 754-757
- [illegible] नीति—*डॉ. अरविन्द कुमार सिंह* 758-759
- [illegible] दशा एवं दिशा—*डॉ. गिरजा प्रसाद मिश्र* 760-761
- [illegible] हित्य के प्रति पक्ष व विपक्ष के तर्कों के मध्य प्रगति की ओर —*डॉ. सुनील कुमार* 762-766
- [illegible] विकास में उत्पन्न अवरोध—*स्वाति मौर्या* 767-771
- [illegible] र्श—*बलिष्ठ* 772-775
- [illegible] तुकडोजी महाराज के काव्य की प्रासंगिकता [illegible] 776-783

* * * * *

S.S. Dhamdhere Arts & Commerce College
Principal
S.S.Dhamdhere Arts & Commerce College

Scanned with CamScanner

(U.G.C. Approved Journal No. : 41329) ISSN No. - 2319-5908

Hindi : Shodh Sandarsh-VII, Vol.-XXII, March. 2019, Page : 679-681

General Impact Factor : 1.7276, Scientific Journal Impact Factor : 4.713

सूरदास का विरह-वर्णन

*डॉ. मनोहर आप्पासो जमदाडे**

सारांश : सूरदास को अष्टछाप के कवियों में प्रमुख माना जाता है। सूर के साहित्य में विभिन्न रसों का बहुत सुंदर चित्रण हुआ है। परंतु वात्सल्य और शृंगार ही इस कवि के प्रधान विषय रहे हैं। वात्सल्य तो इनका अद्वितीय है ही, शृंगार में भी सूर की समानता कोई कर नहीं सकता। शृंगार के संयोग और वियोग पक्ष दोनों में ही उनकी प्रतिभा झलक उठती है। संयोग की प्रतिष्ठा पूरी नहीं होती है, वियोग आ उपस्थित होता है। सूर के विरह काव्य का आरंभ एक साधारण सी घटना से शुरू होता है। कृष्ण गोकुल छोड़कर अक्रूर के साथ मथुरा चला जाता है। कृष्ण केवल नंद और यशोदा के ही नहीं गोकुलवासियों के रोम-रोम में बसे थे। मनुष्य ही नहीं वहाँ की प्रकृति से भी उनका गहरा रिश्ता था। कृष्ण के मथुरा जाने की खबर लगते ही समस्त ब्रजवासी विरह के सागर में डूब जाते हैं। माँ यशोदा पथिक द्वारा देवकी से संदेश भेजने की घटना बहुत ही मर्मस्पर्शी है। कृष्ण के अभाव में विरहिणी गोपियों की दशा बहुत ही दयनीय है। उनका प्रकृति के साथ संवाद उनके विरह की गहराई को दर्शाता है। मथुरा से ज्ञान की बातें बताने के लिए आए उद्धव से गोपियों की वाग्वैदग्धतापूर्ण बातें, वचन-वक्रता तथा भ्रमर को देखकर उनसे संवाद को कवि ने विरह के चरमसीमा तक पहुँचाया है।

विषय विस्तार : कृष्ण काव्य में भक्ति की परंपरा में सबसे अधिक श्रेय सूरदास को जाता है। कृष्ण काव्य का प्रचार-प्रसार करने में अष्टछाप कवियों का कार्य उल्लेखनीय है। अष्टछाप कवियों में सूरदास का स्थान सर्वोपरि है। कृष्ण भक्ति धारा कवियों में सूरदास सबसे लोकप्रिय और प्रसिद्ध कवि है। उनके द्वारा वर्णित कृष्ण काव्य अद्वितीय कोटि का है। उनके काव्य के रसास्वादन में हजारों पाठक डुबकियाँ लगाते हैं। उनका काव्य पाठकों के सामने साक्षात् प्रसंग खड़े कर देता है। कृष्ण के प्रति अनुराग, भक्ति भावना, बाल-लीला, विरह-वर्णन, वात्सल्य वर्णन, संयोग शृंगार, दार्शनिकता, प्रकृति -वर्णन, आदि पढ़कर पाठक भाव-विभोर बन जाता हैं।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने शृंगार को रसराज कहा है। उनके अनुसार शृंगार रस के माध्यम से मनुष्य के सभी भावों की अभिव्यक्ति हो सकती है। सूर ने अपने काव्य में संयोग और वियोग शृंगार का मार्मिक चित्रण किया है। संयोग की अपेक्षा वियोग शृंगार में सूर ने अधिक रस लिया है। कृष्ण के विरह में ब्रजवासियों की अवस्था जल के बिना मछली के समान है। उनके हृदय के कोने-कोने में कृष्ण निवास करते हैं। माता यशोदा के आँख के तारा हैं वे। कृष्ण को देखे बिना गोकुलवासियों की आँखों को सुकुन नहीं मिलता। कृष्ण के लिए गोपिकाओं की मनोभावों का जितना सूक्ष्म अंकन सूर ने अपने काव्य में किया है, उतना अन्यत्र दुर्लभ है।

सूर के विरह काव्य का आरंभ एक घटना पर आधारित है। कंस के कहने पर धनुष यज्ञ के बहाने श्रीकृष्ण और बलराम को मथुरा ले जाने के लिए अक्रूर गोकुल आते हैं। इसकी खबर गोकुल में फैलते ही हलचल मच जाती है। पूरा वातावरण विरह से भर जाता है। सूर के विरह में हमें तीन प्रकार के पात्र मिलते हैं- एक है माता-पिता, दूसरें हैं गोपियाँ, तीसरी राधा। कृष्ण हर ब्रजवासियों के हृदय में विराजित थे। उनके अभाव में वे जीने की कल्पना भी नहीं कर सकते थे। कृष्ण के मथुरा जाने की कल्पना से ही गोपियों की सांसों की गती रूक जाती है। गोपियाँ आपस में कहने लगती है-

'चलन-चलन स्याम कहत, लैन कोउ आयौ।
नंद-भवन भनक सुनी, कंस कहि पठायौ।।'[1]

यह समाचार पाकर ब्रज की स्त्रियाँ व्याकुल होकर दौड पड़ती है। नंद के घर में यह खबर पहुँचते ही माँ यशोदा के हृदय की धड़कने एक पल के लिए थम जाती है। यशोदा के आगे तो दिन में अंधेरा छा जाता है। किसी भी

* सहयोगी प्राध्यापक एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, साहेबराव शंकरराव डमडेरे महाविद्यालय, तलेगाव डमडेरे, शिरूर, पुणे, महाराष्ट्र

Principal
S.S.Dhamdhere Arts & Commerce College
Talegaon Dhamdhere, Tal. Shirur
Dist. Pune-412 208

तमसो मा ज्योतिर्गमय

Scanned with CamScanner

[illegible] वह अपने बच्चों को आँखों के सामने देखना चाहती है। बच्चों की दूरियाँ [illegible] कृष्ण और बलराम को कितने प्यार के साथ पाल–पोसकर बड़ा किया है। दोनों [illegible] वह दोनों पुत्रों को छोड़कर जीवन जीना उसके लिए असह्य है। अपने प्राणों [illegible] अति व्याकुल होकर वह कहती है–

(मेरे) कमलनैन प्रानति तै प्यारे।
इन्है कहाँ मधुपुरी पठाऊँ, राम कृष्ण दोऊ जन बारे।।[12]

[illegible] कृष्ण के जाते समय सारी स्त्रियाँ ऐसी [illegible] आँखों से निकलनेवाली जलधारा [illegible] गोपिकाओं की नींद भी उड़ जाती है। वे रात [illegible] कृष्ण–कृष्ण का जाप करती हैं। वे कहती हैं–

आजु रैनि नहिं नींद परी।
जागत गिनत गगन के तारे, रसना रटत गोविंद हरी।।[13]

[illegible] कभी जुदा नहीं हो सकता। सूर ने अपने [illegible] कृष्ण कंस का वध करते हैं और मधुपुरी [illegible] बेटी की चिंता सताती है। प्रातः होते ही [illegible] फिर नहलाती थी। पर मेरा बेटा संकोच [illegible] बेटे की आदतों का संदेश भेजती [illegible] की झलक देखने को मिलती है। वह कहती है–

संदेसो देवकी सौं कहियौ।
हौं तौ धाइ तिहारे सुत की, मया करत ही रहियौ।।
जदपि टेव तुम जानति उनकी, तऊ मोहिं कहि आवै।
प्रात होत मेरे लाल लड़ैते, माखन रोटी भावै।।
तेल उबटनो अरु तातो जल, ताहि देखि भजि जाते।
जोइ जोइ माँगत सोइ सोइ देती, क्रम क्रम करि कै न्हाते।।[14]

[illegible]

निसि बिछुरन की बेदन न्यारी।
जाहि लगै सोई पै जानै, बिरह–पीर अति भारी।।
जब यह रचना रची बिधाता, तबहीं क्यौं न सँभारी।
सूरदास–प्रभु काहैं जिवाई, जनमत ही किन मारी।।[15]

[illegible]

मधुबन तुम क्यौं रहत हरे।
बिरह बियोग स्याम सुंदर के ठाढ़े
क्यौं न जरे।।[16]

सूर के भ्रमरगीत में गोपियों की भाव'–प्रेरित वचन–वक्रता और वाग्विदग्धता अवर्णनीय है। उनकी प्रशंसा करते हुए शुक्लजी लिखते हैं – 'सूरदास का सबसे मर्मस्पर्शी और वाग्वैदग्ध पूर्ण अंश भ्रमरगीत है, जिसमें गोपियों की वचन–वक्रता अत्यंत मनोहारिणी है। ऐसा सुंदर उपालम्भ काव्य और कहीं नहीं मिलता।'[7]

भ्रमरगीत में ऐसे अनेक सुन्दर स्थल है, जहाँ गोपियों की वाग्वैदग्धता पूर्ण बातें सुनकर पाठक भी भ्रमित हो जाता है। वे कहती हैं –

'उर में माखन–चोर गड़े।
अब कैसेहू निकसत नहिं ऊधो! तिरछे जु अड़े।।'[8]

उदधव कृष्ण का संदेश पत्र लेकर गोकुल पहुँचता है। गोपियाँ पत्र को पढ़ना नहीं चाहती। अपना दुख अत्यंत तार्किकता से उद्धव के सामने प्रस्तुत करती हुई कहती है –

'कोउ ब्रज बाँचत नाहिंन पाती।
कत लिखि–लिखि पठवत नंद–नंदन, कठिन बिरह की काँती।।'[9]

उद्धव और गोपियों का संवाद चल रहा था उसी बीच भ्रमर आकर गुंजन करने लगता है। गोपियाँ उस पर संदेह भी करती है और उसे कृष्ण का दूत समझकर उससे शिकायत भी करती है। अपने मन की सारी भड़ास भ्रमर के सामने प्रस्तुत करती है। कृष्ण का गोकुल छोड़कर जाना वे धोका मानती है। वे मधुकर से कहती हैं –

'मधुकर हम न होहिं वै बेलि।
जिन भजि तुम फिरत और रंग, करन कुसुम–रस केलि।।'[10]

उदधव कृष्ण का भेजा गया प्रतिनिधि है। वह कितनी भी ज्ञान की बाते करता है। पर गोपियाँ वाग्वैदग्ध उक्तियों का प्रयोग कर उसे परास्त करती है। कृष्ण के विरह में वे इतनी जली भुनि है कि कृष्ण को सर्प की उपमा देकर कहती है 'सूर व्याल रस चाखैं, मुख नहीं होत अमी कौ।।' अर्थात सर्प अमृत रस को कितना भी चखे किंतु उसका मुख कभी अमृतमय नहीं होता। कभी कुत्ते की पूँछ की उपमा देकर कहती है – 'स्वान पूँछ कोटिक लागै, सूधी कहूँ न करी।।' अर्थात कुत्ते की पूँछ में कोई लाख प्रयत्न करे लेकिन उसे कोई सीधी नहीं कर सकता।

निष्कर्ष : निष्कर्षतः हम कह सकते है सूर ने विरह को भी एक ऊँचाई पर पहुँचाया है। सूर ने विरह–वर्णन में गोपिकाओं की पीड़ा को पर्वत की चोटी तक पहुँचाया है। इसमें कृष्ण के प्रति गोपिकाओं के मन में प्रेम की गहराई कितनी है यह बताने की आवश्यता नहीं रहती। माँ यशोदा द्वारा विरह में भी पुत्र के प्रति चिंता को व्यक्त कर मातृत्व की गरिमा को महिमा–मण्डित किया है।

संदर्भ–सूची

1. सूरसागर सार – सम्पादक धीरेन्द्र वर्मा, साहित्य भवन प्रा. लिमिटेड, इलाहाबाद, पृ. 212
2. सूरसागर सार – सम्पादक धीरेन्द्र वर्मा, साहित्य भवन प्रा. लिमिटेड, इलाहाबाद, पृ. 213
3. सूरसागर सार – सम्पादक धीरेन्द्र वर्मा, साहित्य भवन प्रा. लिमिटेड, इलाहाबाद, पृ. 215
4. सूरसागर सार – सम्पादक धीरेन्द्र वर्मा, साहित्य भवन प्रा. लिमिटेड, इलाहाबाद, पृ. 235
5. सूरसागर सार – सम्पादक धीरेन्द्र वर्मा, साहित्य भवन प्रा. लिमिटेड, इलाहाबाद, पृ. 239
6. भ्रमरगीत सार – आचार्य रामचंद्र शुक्ल, लोकभारती प्रकाशन, संस्करण 2008 पृ. 91
7. सूरदास – सम्पादक द्वारकाप्रसाद मीतल, सेतु प्रकाशन, 186 तलैया, झाँसी, पृ. 133
8. सूरदास – सम्पादक द्वारकाप्रसाद मीतल, सेतु प्रकाशन, 186 तलैया, झाँसी, पृ. 133
9. सूरसागर सार – सम्पादक धीरेन्द्र वर्मा, साहित्य भवन प्रा. लिमिटेड, इलाहाबाद, पृ. 277
10. सूरसागर सार – सम्पादक धीरेन्द्र वर्मा, साहित्य भवन प्रा. लिमिटेड, इलाहाबाद, पृ. 279

* * * * *

S.S.Dhamdhere Arts & Commerce College तमसो मा ज्योतिर्गमय
Principal
S.S.Dhamdhere Arts & Commerce College
Talegaon Dhamdhere, Tal. Shirur
Dist. Pune-412 208
Scanned with CamScanner